डॉक्टर डूलिटिल की घर वापसी

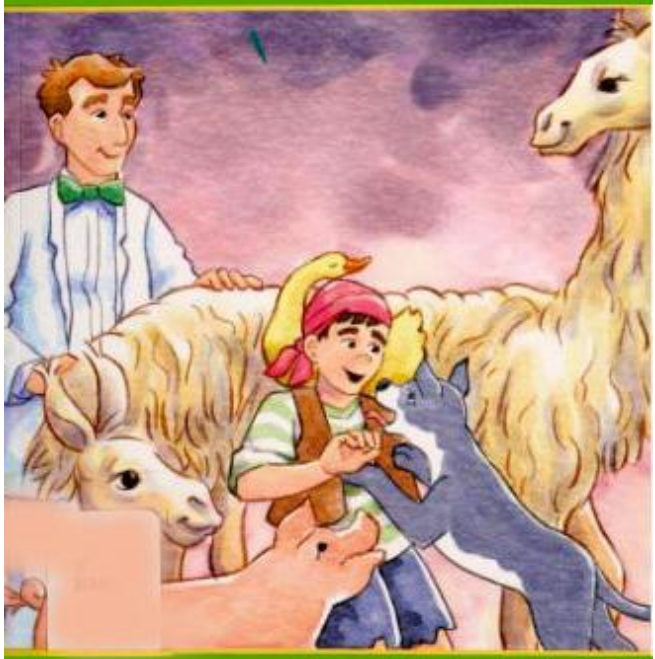

ह्यू लोफ्टिंग

डॉक्टर डूलिटिल की घर वापसी

ह्यू लोफ्टिंग

अचानक आया मेहमान

डॉक्टर डूलिटिल जहाज़ से घर के लिए रवाना हुए.
“अभी तक हमने कई साहसी कार्य किये,”
उन्होंने कहा.
“हमने सर्कस मगरमच्छ की माँ से भेंट की,
हमने शेर राजा के बेटे का इलाज किया,
और हम समुद्री डाकुओं को पीछे छोड़ आए.”
तभी उन्हें पीछे से खट-खट-खट
की आवाज़ सुनाई दी.

“भला यह किसकी आवाज़ हो सकती है?”
डॉक्टर डूलिटिल ने अचरज से पूछा.
फिर सब ने मिलकर जहाज़ की तलाशी ली.
उन्होंने अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे सब तरफ देखा.

फिर डेक पर एक दरवाज़ा खुला
और उसमें से एक छोटा लड़का बाहर निकला.
उसे देखकर सबको बहुत आश्चर्य हुआ.
“तुम कौन हो?” डॉक्टर डूलिटिल ने पूछा.

“आप कौन हैं?” उस छोटे लड़के ने पूछा.
“वो समुद्री डाकू कहाँ हैं?” उसने पूछा.
फिर वो लड़का डेक के ऊपर चढ़ा.

“तुम इस जहाज़ पर कैसे आए?”
डॉक्टर डूलिटिल ने पूछा.
“मुझे लगा कि समुद्री डाकू बनने
में बड़ा मज़ा आएगा,”
छोटे लड़के ने कहा.

“पर वो समुद्री डाकू नीच और मतलबी निकले,”
छोटे लड़के ने कहा,
“इसलिए मैं इस कमरे में छिप गया.”
“तुम कहाँ के रहने वाले हो?”
डॉक्टर डूलिटिल ने पूछा.

“मुझे जगह का नाम
नहीं पता,” उस छोटे लड़के ने कहा.
“पर मुझे पता है कि वो इस दिशा में है,”
उसने ऊँगली से दिखाया.
“या फिर इस दिशा में,” उसने जोड़ा.

डॉक्टर डूलिटिल को समझ नहीं आया कि
वो क्या करें. अगर लड़के को घर का पता
तक मालूम नहीं तो फिर वो उसे वापिस
कैसे भेजें?

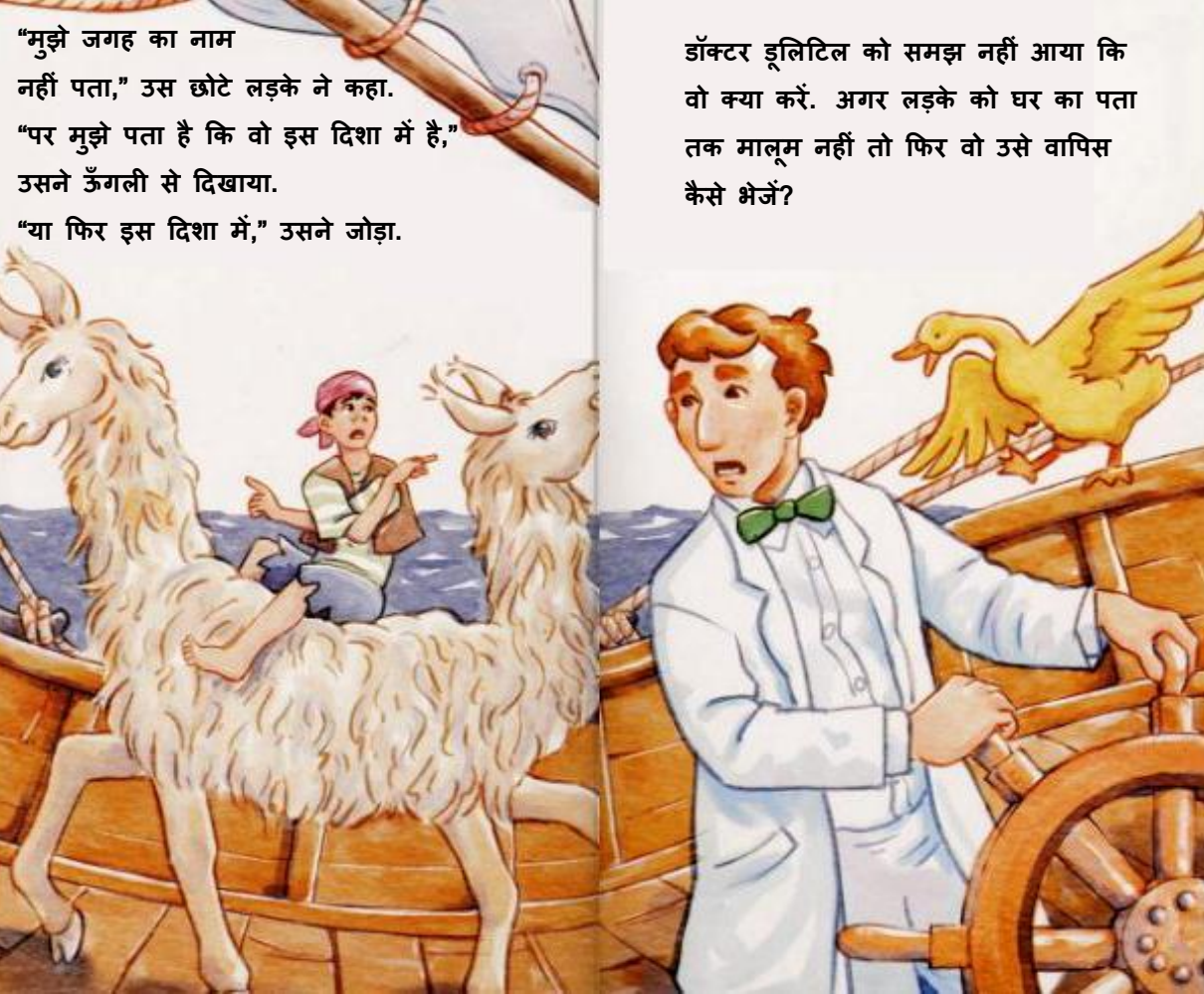

डॉक्टर डूलिटिल ने एक बार सीटी बजाई,
और दो बार जहाज़ का हॉर्न बजाया.
तब तुरंत डॉल्फिन्स का एक परिवार
तैरता हुआ जहाज़ के पास आया.

"मुझे यह बताओ," डॉक्टर डूलिटिल ने उनमें से
सबसे बूढ़ी और समझदार डॉलफिन से पूछा.
"समुद्र में क्या हो रहा है, यह डॉल्फिन्स को
हमेशा पता रहता है. अच्छा यह बताओ कि
यह लड़का किस द्वीप का रहने वाला है?"
"हमें नहीं पता," डॉल्फिन्स ने कहा.

सूंघने वाला कुत्ता

डॉक्टर डूलिटिल जहाज़ के डेक पर
चहलकदमी कर रहे थे.
“सोचो, बेटा,” डॉक्टर ने कहा.
“क्या तुम अपने घर से कुछ लाए थे?”
छोटे लड़के ने कुछ देर सोचा.
“हाँ, मैं यह लाया था,” उसने कहा.

फिर उसने अपनी जेब में हाथ डाला
और खाने का एक टुकड़ा निकाला.
“मेरी माँ ने यह बनाया था,
अब इतना ही बचा है.”

जिप – कुत्ते ने खाने को सूंघा.
“हाँ,” उसने भौंकते हुए कहा.
“मैंने इस मसाले को पहले सूंघा है.
चलो मेरे साथ.”

फिर जिप ने अपनी नाक से
एक दिशा में इशारा किया.
“यह खुशबू उस दिशा से आ रही है.”

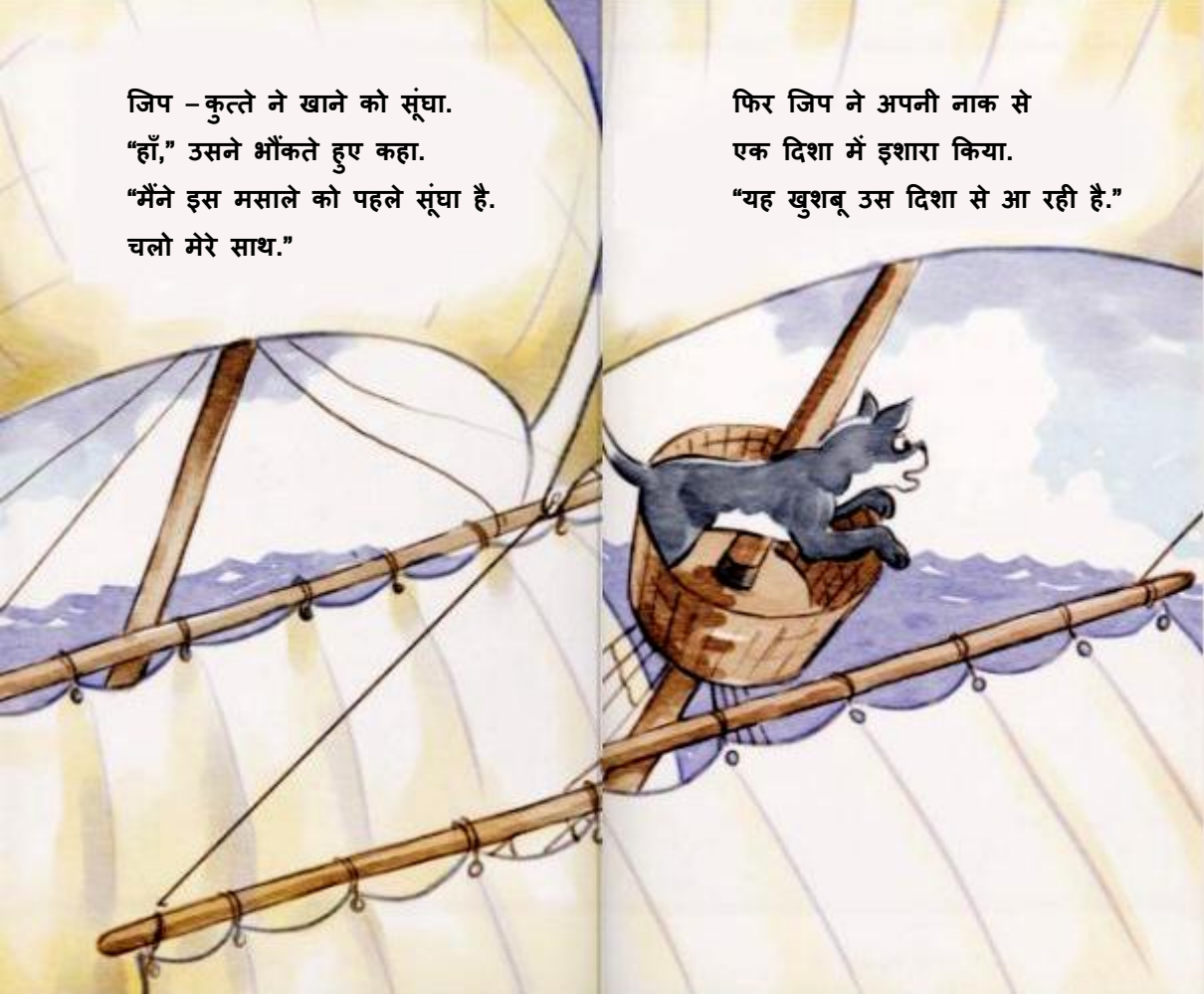

यात्री की वापसी

फिर डॉक्टर डूलिटिल ने जहाज़ को उस दिशा
में मोड़ा जो जिप ने अपनी नाक से दिखाई थी.
जहाज़ घंटों उस दिशा में चलता रहा.
ऐसा लगा जैसे वो कभी उस लड़के
का घर नहीं ढूंढ पाएंगे.
“देखो!” वो छोटा लड़का चिल्लाया.
फिर वो जहाज़ के डेक पर से कूदा
और फिर तैरते हुए सीधे किनारे पर पहुंचा ....

...जहां उसकी माँ उसका इंतज़ार कर रही थीं.
“ज़रा मेरे लिए रुको!” जिप ने भौंकते हुए कहा.
“मेरे लिए भी!” पुशमी-पुलयू ने कहा.
“मेरे लिए भी!” डब-डब ने कहा.
“मेरे लिए भी!” गुब-गुब सूअर ने कहा.

“आपका हज़ार-हज़ार शुक्रिया,” माँ ने कहा.
माँ ने अपने बेटे को गले लगाया.
“मैं आपका क़र्ज़ कैसे चुका सकती हूँ?”
माँ ने डॉक्टर डूलिटिल को एक पुच्ची दी.

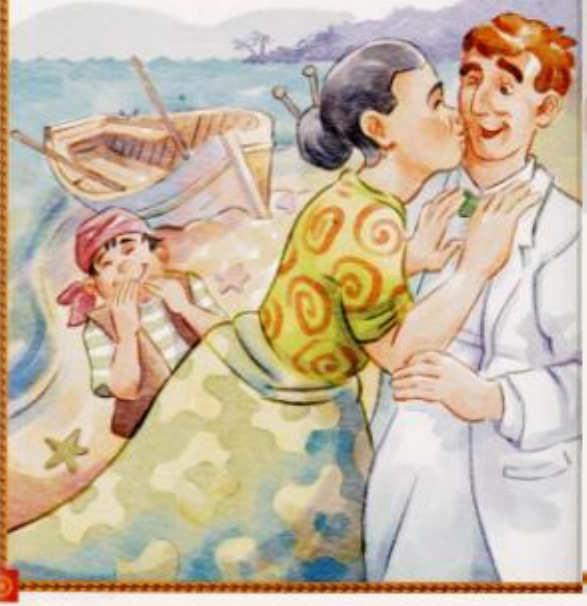

डॉक्टर डूलिटिल को कुछ समझ में नहीं आया.
उनका चेहरा एकदम लाल हो गया.
“मुझे भूख लगी है,” छोटे लड़के ने कहा.
“हमें भी भूख लगी है!” जानवरों ने भी कहा.
फिर सबने मिलकर पेटभर गरमागरम सूप पिया.

“इस मौके पर हमें धूमधाम से ख़ुशी
मनानी चाहिए,” डॉक्टर डूलिटिल ने कहा.
“चलो हम लोग परेड करते हैं,”
डब-डब बत्तख ने कहा.

“मुझे अच्छी परेड में बहुत मज़ा आता है,”
पुशमी-पुलयू ने कहा.
फिर छोटा लड़का उठकर खड़ा हुआ.
“मेरे पीछे-पीछे चलो!” वो चिल्लाया.

परेड में हरेक को बड़ा मज़ा आया.
वो लेफ्ट-राईट करते हुए इधर से उधर गए.
अंत में डॉक्टर डूलिटिल ने कहा,
“अब हमारे चलने का वक्त हो गया है!”

मेरी बहन सोच रही होगी कि हम
इतने महीनों से कहाँ गायब हैं.”
“हम आपके बात समझते हैं,”
छोटे लड़के ने दुखी होते हुए कहा.

फिर गले मिलने के बाद
और आँखों में आंसुओं के साथ
उन्होंने वहां से विदा ली.
फिर डॉक्टर डूलिटिल और उनके जानवर
दुबारा जहाज़ में सवार हुए.

अंत में घर वापसी

उसके बाद डॉक्टर डूलिटिल और जानवर
अपने घर के लिए रवाना हुए.
कई दिन यात्रा करने के बाद
आखिर उन्हें पडिलबी का किनारा दिखाई दिया.
किनारे को देखकर जानवर ख़ुशी से नाचने लगे
और ऊपर-नीचे कूदने लगे.
“सोच रहा हूँ कि हमारे शहर में क्या कुछ बदला होगा,” डॉक्टर डूलिटिल ने कहा. “या हो सकता है कि हालात बिल्कुल पहले जैसे ही हों!”

डॉक्टर डूलिटिल का घर
बिल्कुल पहले जैसा ही था.
उनके घर में ढेर सारी
चिट्ठियां और बिल्स पड़े थे.
फर्श पर धूल जमी थी.

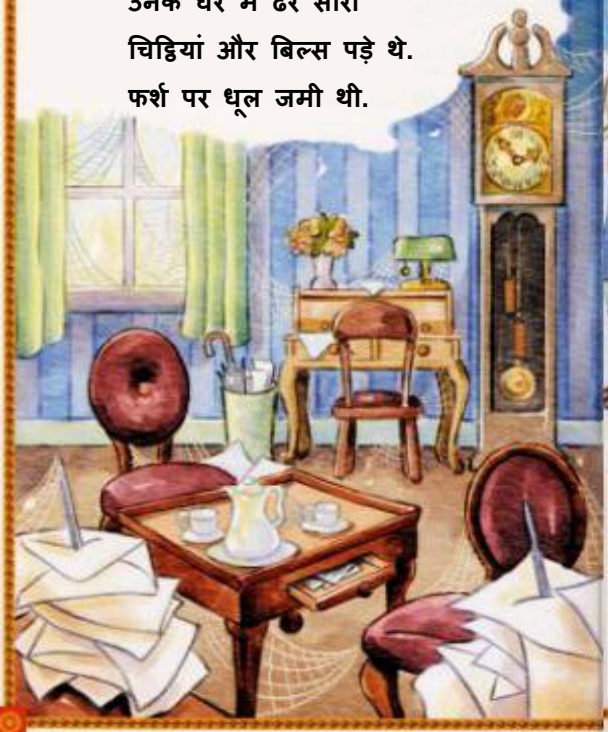

तभी डॉक्टर डूलिटिल की बहन आईं.
“अरे वाह!” वो ख़ुशी से चिल्लाईं जब
उन्होंने पुशमी-पुलयू को देखा.
“मैंने अपने जीवन में इतना सुन्दर और
अजीब जानवर पहले कभी नहीं देखा!”

"उसका ऊन एकदम जादुई है
और तेज़ी से बढ़ता है,"
डॉक्टर डूलिटिल ने कहा.
"काश किसी जादुई तरीके से हम
इन बिलों का भुगतान कर पाते."

"जादुई ऊन!" उनकी बहन ने कहा.
बहन की आँखों में चमक थी.
"मैं तुम सभी के लिए उस ऊन का
एक-एक स्वेटर बुनूँगी. फिर किसी
को ठंड नहीं लगेगी!"

फिर डॉक्टर डूलिटिल की बहन ने
ढेर सारे स्वेटर बुने और उन्हें बेंचे.
इस तरह उन्होंने काफी पैसे कमाए
उन पैसों से वो बिलों का भुगतान कर पाए.
अब घर साफ़ था.
हरेक जानवर के पास एक स्वेटर था.
हरेक के पास भरपूर खाने को था.
डॉक्टर डूलिटिल शहर के सभी
जानवरों से प्रेम करते थे.
उसके बाद सभी लोग
ख़ुश और गर्म रहे!